'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal | E-ISSN : 2348-7143
Issue – 286 (B) : हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना | February-2022
Impact Factor : 6.625 | Peer Reviewed Journal

कवि बृजेश सिंह की गज़लों में अभिव्यक्त आदिवासी चेतना

प्रा. रविंद्र पुंजाराम ठाकरे
अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
समाजश्री प्रशांतदादा हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, नामपुर

प्रो. डॉ. अनिता पोपटराव नेरे
शोधनिर्देशक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष, म.स.गा.महाविद्यालय,
मालेगाँव-कैम्प, तह. मालेगांव, जि.नासिक

भूमिका :-

समाज और साहित्य का घनिष्ठ संबंध है। दोनों एक दूसरे के पूरक, प्रेरक और प्रचारक है। भारत विविधताओं से संपन्न देश है। उसमें विविध उपबोलियों, बोलियों, उपभाषाएं, भाषाएं है। उसमें विविध उपजातियों, धर्म, संप्रदाय, रस्मो-रिवाज, भौगोलिक, प्राकृतिक विविधता है। फिर भी उसके पास एक सर्व समावेशक संस्कृति है, तो विविधता में एकता को बनाए रखती है। राष्ट्रीय एकता, समता, ममता, सौहार्द, शांति बनाए रखने का उत्तरदायित्व जैसे राजनीतिज्ञ, समाजसेवक विविध नेताओं आदि पर है, उनसे भी अधिक साहित्यकारों पर भी है। जिन लोगों का विकास अभी तक नहीं हुआ उनमें आदिवासी, दलित अल्पसंख्यांक किन्नर आदि प्रमुख है । इनमें आदिवासी समाज समस्याओं से घिरा है । आज भी आदिवासी समाज सर्वव्यापी शोषण, दमन, उत्पीड़न, अन्याय, अशिक्षा, अज्ञान, अंधश्रद्धा के गर्त में फंसा हुआ है। आदिवासियों पर जो लिखा गया है वह पर्याप्त नहीं है। उनका दुख-दर्द अभिव्यक्ति की प्रतीक्षा में है।

भारतीय समाज व्यवस्था सदियों से वर्ण और वर्ग विभाजन पर आधारित है । यहाँ अमीरी-गरीबी की खाई अजीब है । एक वर्ग इतना अमीर है कि उसे अपनी कितनी संपत्ति और धन राशि है, यह मालूम नहीं है और दूसरा दो वक्त का पेट भरने के लिए वनों में भटक रहा है । भारत अमीर लोगों का गरीब देश है । यहाँ सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक विषमता शीर्षस्थ है । इसी कारण मुख्य प्रवाह से पीछे छुटा हुआ जो समाज है, उसे आदिवासी समाज कहा गया है । भारत में आदिवासी समाज की तादात सबसे अधिक है । वे जल, जंगल और जमीन से जुड़े है । आदिवासी दूरदराज के पहाड़ों एवं जंगलों में अपना जीवन बसर करने को विवश है । इनके घरों में किसी प्रकार की सुख-सुविधाएँ, आरोग्य या शिक्षा का कोई ठोस प्रबंध नहीं है । अशिक्षा, अंधश्रध्दा, अपमान, घृणा, तिरस्कार और अमानवीयता इनके जीवन प्रमुख हिस्सा है । यह समाज तथाकथित व्यवस्था का शिकार है । इनका अस्तित्व केवल चुनावी और रेशन कार्ड तक सीमित रह गया है । भारत जैसे 'विश्वगुरु' कहे जानेवाले देश में मानव की मानव के प्रति उपेक्षा और घृणा का भाव, भारतीय समाज को उन्नति की नहीं अवनति की ओर ले जानेवाला है ।

विषय प्रवेश :-

वर्तमान युग में गज़ल एक प्रभावी काव्य विधा है । वह भावभिव्यक्ति के लिए अत्यंत सहज और प्रबल प्रतीत हुई है । इसके साथ ही आधुनिक भावबोध को पिरोकर हिंदी ग़ज़ल पारंपारिक प्रतिमानों से भिन्न यथार्थ को चित्रित करने में सफल हो रही है । वह आम आदमी के दुःख दर्द, संघर्ष और जिंजीविशा को बयान कर रही है । दुष्यंत के बाद अन्य हिंदी ग़ज़लकारों ने प्रतिभा, अनुभूति और अभिव्यक्ति के दम पर ग़ज़ल को विविधता और विराटता से जोड़ा है । इस परंपरा का निर्वाह करने में कवि बृजेश सिंह की गज़लें सार्थक सिद्ध हुई है । कवि बृजेश सिंह हिंदी ग़ज़ल के प्रमुख हस्ताक्षर है । उनका ग़ज़ल साहित्य भारतीय समाज व्यवस्था को बेनकाब करता है । मानव का मानव के प्रति उपेक्षित भाव कवि को खलता है । हिंदी के वरिष्ठ आलोचक डॉ. विनय

Scanned with CamScanner

अंतराल में ही ग़ज़ल के क्षेत्र में अपनी बुलंदी का परचम लहरा दिया है। आपकी ग़ज़लों देश व समाज के प्राय: सभी विषयों को छुते हुए न केवल समस्याओं को सामने लाती हैं अपितु समुचित समाधान भी सुझाती हैं।"(1)

कवि बृजेश सिंह का गज़ल साहित्य वर्तमान सामाजिक विसंगतियों का इस्पाती दस्तावेज है। अपने साहित्य के माध्यम से कवि ने आदिवासी के समाज के दर्द को वाणी प्रदान की है और तथाकथित विषम व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है। आदिवासी अपने ही देश में अनजान हो गए है। वे न चैन से जी सकते हैं और उनको जीने दिया जाता है। तथाकथित समाज उनके प्रति तिरस्कार, हीनता और ज़हालत भरी दृष्टि से देखता हैं और भाईचारा, एकता तथा समानता की बात करता है, ऐसी दोगली एवं सफेदपोश व्यवस्था की दहशतगर्दी से कवि खीज उठते हैं,

"अपने ही वतन से बेदखल हो चले जाने कब से लोग।
बेबस सुनते भाई-चारे की बातें वहसी मेहमानों से।।
न जीते चैन से न जीने देते हमें चैन से 'बृजेश'।
जाने कब पीछा छुटेगा दहशतगर्द वहशी शैतानों से।"(2)

भारतीय समाज में सामाजिक, राजकीय, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षिक सभी दृष्टियों से स्तर भदे है। आदिवासियों का शोषित का जीवन जीने का प्रमुख कारण आर्थिक विपन्नता है। इसीलिए इन लोगों के हिस्से में अपमान और उपेक्षा आयी है। गरीबी के कारण इस वर्ग को अशिक्षा, अंधश्रध्दा, अन्याय, अपमान का शिकार होना पड़ा है। कवि भारतीय समाज में व्याप्त अमीरी-गरीबी की खाई को चित्रित करते हुए कवि लिखते है, -

"गरीबी में अपने करीबी भी अपने कहाँ होते।
पानी उतारने के लिए सभी तैयार हो गये।
गरीब होना यकीन मानों सबसे बड़ा अपराध।
बेगुनाह होते आरोपों के बौछार हो गये।।
'बृजेश' गरीबों के न्याय की कौन सोचता।
जब दौलत वाले न्याय के खरीददार हो गये।।"(3)

आदिवासी समाज के प्रति सरकार का रवैया भी दोयम है। आदिवासी समाज के उद्धार के खातीर कई नयी-नयी योजनाओं की घोषणाएँ सरकार करती है। आदिवासियों को समाज के मुख्य प्रवाह में लाने की बात करती है। लेकिन इस वर्ग तक योजनाएँ आते-आते सुख जाती है। प्रत्यक्ष लाभार्थी वंचित रहकर बाबू लोग ही इन योजनाओं से निहाल हो जाते हैं। सरकार की कुछ योजनाओं के लिए जब आदिवासी बैंकों में जाते हैं तब बैंकों का रवैया भी अजीब है। जिनको कम कर्जा दिया जाता हैं उनसे सक्ति के साथ वसुला जाता है और जो बड़े-बड़े कर्जदार है उनको दया दिखाई जाती है। कवि इस व्यवस्था को बेपर्दा करते हुए लिखते हैं, -

"छोटी-मोटी वसूली खातिर खूंखार हो गये।
बड़े कर्जदारों के लिए बैंक वाले उदार हो गये।।
हजारों लाखों के कर्ज पर कहर बरप गये मगर।
करोड़ो दबाने वाले सम्मानित कर्जदार हो गये।।"(4)

जल, जंगल और जमीन से जुड़े आदिवासियों की स्थिति भारतीय समाज व्यवस्था के कारण भयावह है। आज भी वे पशुतुल्य जीवन बसर करने को अभिशप्त है। उनकी जमीनों,जंगलों को हड़पकर उन्हें बे-घर किया जा रहा है। उनके पास तन ढ़कने के लिए भी कपड़ा नहीं है अत: वे इस सफेदपोश व्यवस्था की साजिश को समजने का हुनर कहाँ से ला सकेंगे ? इन आदिवासियों को दिन-दहाड़े ठगा जा रहा है। जब ये लोग तथाकथित व्यवस्था का विरोध करते हैं तो उन्हें देशद्रोही करार दे दिया जाता है। उनकी जमीने हड़पकर उन्हें भूमिहीन किया जा रहा है। कवि बृजेश सिंह ने इस संदर्भ में सटीक टिप्पणी की हैं, - "वनवासियों को ठगकर बड़े मालदार हो गये।

नक्सल पनपने के ये ही जिम्मेदार हो गये।।
सीधे-सादे वनवासी आज भी लंगोटी में।
नमक बदले चिरौंजी वाले साहूकार हो गये।।

Scanned with CamScanner

शोषण से मुक्ति दिलाने का नाम गुलाम बनाना ।
कैसे-कैसे अवाम के खिदमतगार हो गये ।।"(5)

यह विडंबना है कि, आदिवासी समाज का शोषण करने वाले ही महिमामंडित हो रहे हैं । वे ही मान-सम्मान के अधिकारी बन बैठे हैं । वे ही धर्म रक्षक और मानवता का परचम लेकर घुम रहे हैं । यह देख कर कवि को अत्यधिक पीड़ा होती है-

"देख के आततायियों का महिमामंडन बार-बार ।
हमको अतीत के टीस भयानक त्रास देते हैं ।।
बेशर्म आँखों का पानी मर चुका, जाने कब का ।
बेगैरतमंदी का आलम यही आभास देते हैं ।।"(6)

भाईचारा, एकता और समानता का ठेका लेकर घुमनेवाले ही मानव-मानव में भेद कर रहे हैं । शांति के मसिहा बनकर घुमनेवालों के ही हाथ खून से रंगे हुए हैं । इन तथाकथित समाज के ठेकेदारों के कारण ही आदिवासी यातनाएँ भोग रहा है । कवि का मानना है कि अगर भरत में एकता बरकरार रखनी है, विश्व के सामने भारत का आदर्श खड़ा करना है और विश्व में भारत को महासत्ता बनाना है, तो हमें सबको साथ लेकर चलना होगा । विकास केवल बोलने, दिखावे के लिए नहीं बल्कि हाशिए के समाज को साथ लेकर करना होगा । क्योंकि हाशिए का जीवन भारतीय व्यवस्था की देन है । डॉ.सु.मो. शाह इस संदर्भ में लिखते है-"भूमंडलीकरण, उदारीकरण तथा उच्च तकनीकी के इस दौर में आज वैश्विक समाज का अगर कोई तबका विकास की यात्रा में किन्हीं कारणों से नहीं जुड़ पा रहा है। तो यह तबका है आदिवासी समाज यह दुखद आश्चर्य है कि भौतिक प्रगति के इस दौर में यह समाज अपनी आदिम मानसिकता के स्तर पर ही जीने के लिए अभिशप्त है"।(7)

आजादी का अमृतमहोत्सव मानते देश में आदिवासियों के हक़ की जमीन लुटी जा रही है। उन्हें समाज की मुख्य धारा से दूर जंगलों में रहने के लिए मजबूर किया जा रहा है । आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा का प्रचार-प्रसार पूरी तरह से नहीं हुआ है। इसलिए वे सरकारी नौकरियों से भी वंचित रह गए और आज भी गरीबी की रेखा के नीचे ही हैं। आदिवासियों के कवि लिखते हैं-

"गरीब वनवासी को गरीब ही रह जाना है। आरक्षण का लाभ कुछ विशेष का हथियाना है।।
दूसरे तो दूसरे अपने भी शोषण कर रहे। आरक्षण से कुछ विशेष घरानों को मुटियाना है।।
आजीविका साधन औद्योगीकरण भेंट चढ़े । आदिवासियों को हक से वंचित कराना है।।
माओवादी वनवासियों का मसीहा बनते। शोषकों को वनवासियों का रहनुमा बताना है।।
एक ओर नक्सली आतंक दूसरी ओर पुलिस। आदिवासियों का नसीब दोनों के मध्य पिसाना है"।।(8)

कवि को लोकतंत्र में अटूट विश्वास है। कवि इस लोकतंत्र को मज़बूत बनाने के लिए संविधान का अवलंब करने के अभिलाषी है । उँच-नीच के भेद से भारत की उन्नति में खलल पैदा हो रही है । हमें संकुचित सोच को त्यागकर कल के उज्ज्वल भविष्य के लिए व्यापक और उदात्त सोच रखने का आह्वान कवि करते हैं ।

"धरा को अलंकृत करें, हरियाली से सजाना है। मगर वनवासियों का न अधिकार मिटाना है।।
सहज ही सूखी लकड़ियां मिल जाती जंगलों से। फिर क्यों वनवासीजनों का चूल्हा बुझाना है।
वन के सहारे जीते आये सदियों से । ना उचित उन्हें वन से बेदखल कराना है।।
ना मुजबानी बल्कि ईमानदार कोशिश चाहिए। पहले खुद को ढालें औरों फिर को सिखाना है।
ऐसी सम्यक् व्यवस्था होनी चाहिए 'वृजेश' । वन भी बचे वनवासियों को भी बचाना है"।।(9)

मानव का मानव के प्रति हीन भाव भारतीय समाज का गंभीर कलंक है और इस कलंक को समूल मिटाने के लिए कवि सदैव तत्पर हैं, -

"यह उँच-नीच जातीय बन्ध, इस भारत भू का है संवर ।
निज आभ न पाया प्रजातंत्र, जो संविधान में नव्याक्षर ।।"(10)

आज चहुँ ओर नायकों का नहीं, खलनायकों का अधिपत्य है । यह खलनायक देश, समाज और मानवता के दुश्मन हैं । वे मानवता, समानता, विकास, प्रगतिशिलता और नैतिक मूल्यों की बात करते है परंतु प्रत्यक्ष व्यवहार में मनुष्य-मनुष्य में भेद करते हैं । मानवता धर्म और भारतीय संस्कृति का उपहास उड़ाते हैं तथा सामाजिक मान्यताओं और आचार-विचारों को अमहत्वपूर्ण बताते हैं । ये तथाकथित ऐसे प्रगतिशील विचारों के

Scanned with CamScanner

प्रचारक है, जो नैतिक मूल्यों का हनन करते हैं और हाशिए के समाज का शोषण करते हैं। कवि बृजेश सिंह हाशिए के समाज का दर्द बयान करते हुए तथाकथित समाज के ठेकेदारों को आगाह करते हैं और देश की प्रगति के लिए हाशिए के समाज के मुख्य धारा में लाने का एलान करते हैं। तब ही देश की बिगड़ी सूरत बदल सकती है। कवि लिखते हैं, -

"अवाम की बिगड़ी तकदीर चाहिए।
सियासतदारों की तदबीर बदलनी चाहिए।
बहुत हो चुका बन्द करो लफ्फाजियों का खेल।
मुल्क की मुकम्मल तस्वीर बदलनी चाहिए।।"(11)

कवि बृजेश सिंह के साहित्य में हाशिए के समाज का दर्द मार्मिक रुप में चित्रित हुआ है। कवि को पशुतुल्य जीवन ढ़ोते हाशिए के समाज के प्रति गहन आस्था है। भारतीय समाज में जाति, पाति का भेद, लिंग भेद, स्तर भेद आदि अनेक बुरे रिवाज मौजूद है, जिससे देश में विषमता और बढ़ रहा है। कवि इस पक्षपाँति प्रवृत्ति का विरोध करते हैं और पक्ष रहित समाज की स्थापना की माँग करते हैं। जो धर्म मानव मात्र के स्पर्श से अपवित्र हो जाता है, कवि ऐसे धर्म को नकारते हैं और मानव से घृणा करनेवाले धर्म के रखवालदारों को फटकारते हैं।

"ऐसा न चाहिए ईश मुझे, जिनको छुने से लगे छूत।
जो मनुज मात्र से घृणा करे, वह यहाँ धर्म का बना दूत।।(12)

हाशिए के समाज की धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वेदना को कवि बृजेश सिंह ने अपनी ग़ज़लों में मुखर अभिव्यक्ति दी है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहाँ जा सकता है कि, कवि डॉ. बृजेश सिंह का ग़ज़ल साहित्य हाशिए के समाज की पीड़ा को अभिव्यक्त करने में समर्थ है। आदिवासी समाज अरण्यमुखी संस्कृति, अज्ञान, गरीबी के कारण भूखमरी तथा कुपोषण से जुझ रहा है। सुविधाओं से वंचित अभावग्रस्त जीवन जी रहा है। आदिवासी समाज झारखंड, बिहार, पश्चिम चंपारण्य के साथ-साथ समस्त भारत वर्ष में स्थित है। अधिकतर आदिवासी कोयला खदानों में मजदूरी करनेवाले है जो पूँजिपति, ठेकेदार, जमींदार, महाजन तथा पुलिस के अंतहीन शोषण में जकड़े हुए हैं। कवि बृजेश सिंह ने आदिवासी समाज की आर्थिक बदहाली को करुणाभरी निगाहों से आँका है। सभी ओर से शोषण के जाल में फँसे अभावग्रस्तता में छटपटाते आदिवासी समाज के प्रति उन्होंने गहरी सहानुभूति प्रकट की है। हाशिए का समाज जहाँ अमानवीय यातनाएँ भोगकर जीवन यापन कर रहा है, वहीं वह आत्मसंघर्ष करता भी प्रतीत होता है। कवि ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से हाशिए के समान की चेतना को उजागर किया है। साथ ही तथाकथित समाज के ठेकेदारों, नेताओं की दोयम मानसिकता को बेनकाब करके भारतीय समाज में मानवता, एकता, समता और शांति की स्थापना की है। कवि बृजेश सिंह की ग़ज़लें मानवता की पक्षधर हैं तथा इनमें 'वसुदैव कुटुंबकम्' की भावना विद्यमान है।

संदर्भ :-

1. डॉ. सिंह बृजेश, 'हालात-ए-वतन' भूमिका से
2. डॉ. सिंह बृजेश, 'हकीकत', पृ.52
3. डॉ. सिंह बृजेश, 'हालात-ए-वतन', पृ.23
4. डॉ. सिंह बृजेश, 'हालात-ए-वतन', पृ.50
5. डॉ. सिंह बृजेश, 'हालात-ए-वतन', पृ.42
6. डॉ. सिंह बृजेश, 'निष्कर्ष', पृ.16
7. राष्ट्रवाणी,(द्वैमासिक पत्रिका) मई –जून 2014 (अंक -2), पृ-05

Scanned with CamScanner

8. विकास संस्कृति (त्रेमासिक साहित्यिक पत्रिका) जुलाई-अगस्त-सितंबर,2012,अंक -23,वर्ष-6 पृ-50
9. डॉ. सिंह बृजेश, 'आहुति', पृ.139
10. डॉ. सिंह बृजेश, 'मुक्तक मणि', पृ.19
11. डॉ. सिंह बृजेश,, 'आहुति', पृ.137
12. विकास संस्कृति (त्रेमासिक साहित्यिक पत्रिका) अक्टूबर-नवंबर-दिसंबर, 2011 अंक-20 वर्ष-5, पृ-32

Scanned with CamScanner

February 2022 E-ISSN : 2348-7143

International Research Fellows Association's

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Special Issue – 286 (B)

अतिथी संपादक :
डॉ. उज्जन कदम, (प्राचार्य)
समाजश्री प्रशांतदादा हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, नामपुर, तह. बागलान, जि. नासिक (महाराष्ट्र)

विशेषांक संपादक :
प्रा. हर्षल बच्छाव

विशेषांक सह-संपादक :
प्रा. रवींद्र ठाकरे
प्रा. आनंदा पवार

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर

For Details Visit To : www.researchjourney.net

Swatidhan Publications

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृ.क्र.
०१	'धरती आबा' नाटक में चित्रित आदिवासी चेतना	डॉ. योगिता हिरे, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	०७
०२	आदिवासी समाज : वर्तमान दशा और दिशा	डॉ. अशोक जाधव	१३
०३	महादेव टोप्पो की कविताओं में आदिवासी चेतना	प्रो. डॉ जिभाऊ मोरे	१७
०४	हिंदी काव्य विधा में आदिवासी चेतना	डॉ. पूनम बोरसे	२२
०५	हिंदी काव्य में आदिवासी चेतना	डॉ. राजाराम शेवाले	२९
०६	आदिवासी कहानियों में चेतना के स्वर	डॉ. रघुनाथ वाकळे	३३
०७	कवि वृजेश सिंह की गज़लों में अभिव्यक्त आदिवासी चेतना	प्रा.रविंद्र ठाकरे, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	३८
०८	आदिवासी विमर्श	प्रा. के. के. बच्छाव	४३
०९	लोक संस्कृति का संवाहक - आदिवासी समाज	डॉ. यशोदा मेहरा	४५
१०	हिंदी काव्य नाटक विधा में आदिवासी चेतना	डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी	४९
११	निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी स्त्री विमर्श	प्रा. हंसा बागरे	५२
१२	हिंदी मौखिक इतिहास मे आदिवासी चेतना	डॉ. ज्योती रामोड	५७
१३	राजेंद्र अवस्थी के उपन्यास में आदिवासी विमर्श	डॉ. सीताबाई पवार	६०
१४	हिंदी कविताओं में आदिवासी चेतना	डॉ. योगिता घुमरे	६४
१५	उपन्यास साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन संघर्ष	प्रा. निलेश पाटील	६७
१६	हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना	प्रा. निलेश देशमुख	७०
१७	कथाकार संजीव के 'धार' उपन्यास में चित्रित आदिवासी चेतना	डॉ. अनिता राजबंशी, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	७४
१८	आदिवासी समाज और हिंदी नाटक	डॉ. दीपा कुचेकर	७९
१९	हिंदी उपन्यास विधा में आदिवासी चेतना	डॉ. बाबासाहेब रसूल शेख	८५
२०	हिन्दी साहित्य में आदिवासी चेतना	प्रा. जगदीश पाटनवार	८८
२१	२१ वी सदी के हिंदी काव्य में आदिवासी चेतना	डॉ. संदिप देवरे	९१
२२	'मौन घाटी' उपन्यास में आदिवासियों का सामाजिक जीवन	प्रा. हर्षल बच्छाव, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	९४
२३	हिंदी काव्य विधा मे आदिवासी चेतना	प्रा. दिपक आहिरे	९७
२४	समकालीन आदिवासी साहित्य में जन चेतना	प्रा. राकेश पगार	१००

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

Scanned with CamScanner